मुख्य बिंदु

आत्मा के घेरे

सत्व, रज, तम

प्रश्न : सांख्य ने प्रकृति का गुण विभाजन किया। इसे आपने बहुत वैज्ञानिक बताया और यह भी कि यह ज्ञान तक पर लागू है। केवल परमात्मा गुणातीत है। तो क्या समझा जाए कि ज्ञान भी प्रकृति या पदार्थ का ही सूक्ष्म रूप है?

निश्चित ही। होना, परमात्म-भाव है। जानना, प्रकृति का विकार है। होना, जानने के बिना हो सकता है। जानना, होने के बिना नहीं हो सकता। तुम हो सकते हो बिना जाने, इसलिए होना तो मूल आधार है। लेकिन जानना तो होने के बिना नहीं हो सकता, इसलिए जानने को गौण रखो। जानना दोयम है, द्वितीय है, मूल केंद्र नहीं है। छोड़ा जा सकता है, उसके बिना हुआ जा सकता है। जानना प्रकृति के माध्यम से है।

इसलिए तो जानने के लिए संसार में भेजना पड़ता है, आना पड़ता है। बिना प्रकृति के संयोग के जानना न होगा। और जब कोई जान लेगा पूरा, तब फिर प्रकृति में नहीं लौटता। अब कोई जरूरत न रही। अब होने में लीन हो गया। उस होने को ही हम परमात्म-भाव, ब्रह्म-भाव, निर्वाण कहते हैं।

फिर तुम्हारा जानना भी तुम्हारे गुणों पर निर्भर होता है। अगर तुम्हारी प्रकृति तामसी है, तो तुम्हारा जानना भी तामसी होगा। तुम जो जानने की उत्सुकता रखोगे, वह भी तामस से पैदा होगी।

अब ऐसे लोग हैं कि अगर तुम उनकी जिज्ञासा पूछो, तो हैरान होओगे। उनकी

जिज्ञासा बताएगी कि वे क्या जानना चाहते हैं। वे क्षुद्र में उत्सुक हैं, व्यर्थ में उत्सुक हैं, बुराई में उत्सुक हैं, निंदा में उनका रस है।

अगर तुम संसार में घूमकर देखो, तो जितने लोगों को निंदा-रस में डूबे पाओगे, उतना तुम किसी रस में डूबे हुए न पाओगे। निंदा अमृत मालूम पड़ती है। कोई किसी की निंदा कर रहा है, गाली दे रहा है। कोई किसी का खंडन कर रहा है, कोई किसी की बुराइयां बता रहा है। कितने लोग प्रसन्न होकर सुनते हैं और कितनी सरलता में श्रद्धा करते हैं। कोई संदेह भी नहीं उठाता।

बुराई पर तो संदेह कोई उठाता ही नहीं। बुराई को तो लोग बिलकुल चुपचाप स्वीकार कर लेते है, जैसे तैयार ही बैठे थे। बस, किसी के बताने की जरूरत थी।

अगर तुम किसी की भलाई बताओ, कोई सुनने को उत्सुक नहीं है। लोग कहते हैं, क्यों उबाते हो? क्यों बोरियत पैदा करते हो? तुम भलाई की बात करो, भीड़ छंट जाएगी। भीड़ निंदा में उत्सुक है।

राजनैतिक की सभा हो, बड़ी भीड़ इकट्ठी होगी। क्योंकि वहां सारी चर्चा तमस की होने वाली है; गाली-गलौज होने वाली है। धर्म की चर्चा हो, भीड़ छंट जाएगी। जैसे-जैसे सत्य की चर्चा गहरी होने लगेगी, वैसे-वैसे लोग छंटने लगेंगे। रस न आएगा।

रस तुम्हारी प्रकृति से आता है।

राजसी व्यक्ति का रस महत्वाकांक्षा में है, वासना है। वह उसकी तलाश में लगा है। अगर कोई उसे नए रास्ते बता दे महत्वाकांक्षा पूरी करने के, तो वह सुनेगा। सात्विक व्यक्ति को आकांक्षा सत्य को जानने में है।

सत्व, रज, तम, ये तीन प्रकृति के गुण हैं, जो तुम्हारी आत्मा को घेरे हैं। जैसे तीन चश्मे लगे हों। तो जिस रंग का चश्मा है, वैसी तुम्हें प्रकृति दिखाई पड़ती है। अगर तुमने लाल चश्मा लगा लिया, तो सारा संसार लाल मालूम पड़ता है।

सत्व, रज, तम, ये तीन प्रकृति के गुण हैं, जो तुम्हारी आत्मा को घेरे हैं। जैसे तीन चश्मे लगे हों। तो जिस रंग का चश्मा है, वैसी तुम्हें प्रकृति दिखाई पड़ती है। अगर तुमने लाल चश्मा लगा लिया, तो सारा संसार लाल मालूम पड़ता है

तुम्हारी आत्मा पर ये तीन गुण हैं। इनके माध्यम से तुम देखते हो। जो भी तुम देखते हो, वह इनसे प्रभावित होता है। जब ये तीनों गिर जाते हैं, तब भी नहीं बचता, क्योंकि एक ही रह जाता है। फिर द्रष्टा और दृश्य, दोनों खो जाते हैं। शुद्ध ऊर्जा रह जाती है।

इसलिए परमात्मा को तुम न तो अज्ञानी कह सकते, न ज्ञानी। ज्ञानी कहना भी उचित न होगा। अज्ञानी कहना तो उचित होगा ही नहीं। तो परमात्मा को हम क्या कहें?

इसलिए तो परमात्मा बेबूझ पहेली है। उसे ज्ञानी कहें, तो भी ठीक नहीं मालूम पड़ता। क्योंकि ज्ञानी का मतलब है, वह कुछ जानता है; और जानने की तो सीमा होगी। कितना ही जानता हो, तो भी सीमा होगी। बड़े से बड़े ज्ञानी की भी सीमा होगी। अज्ञानी तो कह ही नहीं सकते। फिर परमात्मा को हम क्या कहें?

ज्ञानातीत है, भावातीत है, गुणातीत है। हमारे सब विभाजन नीचे छूट जाते हैं। वहां तक कोई भी हमारा विभाजन नहीं जाता है।

मैंने सुना है कि मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी ने उसे किसी दूसरी स्त्री के साथ बैठे हुए देख लिया कमरे के भीतर, प्रेमालाप में संलग्न। दरवाजा लगाना भूल गया था नसरुद्दीन। दरवाजा खुला, पत्नी भीतर आ गई। चीखी-चिल्लाई और उसने कहा कि अब मुझे सब पता चल गया। नसरुद्दीन ने कहा, ठीक है, अगर सब पता चल गया, तो लाटरी में कौन-सा नंबर जीतेगा, बता।

पत्नी कह रही है, मुझे सब पता चल गया अब, क्योंकि देख लिया यह स्त्री के साथ बैठे हुए। अब सब रहस्य जाहिर हो गया कि क्या गड़बड़ चल रही थी। लेकिन नसरुद्दीन के मुंह से जो बात निकली वह यह कि अगर सब पता चल गया, तो बता लाटरी में कौन-सा नंबर निकलेगा।

हमारे भीतर हमारी जानने की उत्सुकताएं हैं।

मैं बहुत परेशान था सफरों में। खासकर बंबई से जब भी मैं वापस यात्रा करता, तो हमेशा झंझट होती। क्योंकि वह जो एयरकंडीशंड कमरे के नौकर होते, वे देख लेते, इतने लोग छोड़ने आए हैं। तो बंबई में तो इतने लोग छोड़ने आते हैं तभी, जब कोई लाटरी के नंबर बताता हो, रेस के घोड़े का नाम बताता हो! और तो कोई कारण नहीं बंबई के लोगों को इतने आदमी छोड़ने आने का।

अगर तुम संसार में घूमकर देखो, तो जितने लोगों को निंदा-रस में डूबे पाओगे, उतना तुम किसी रस में डूबे हुए न पाओगे। निंदा अमृत मालूम पड़ती है। कोई किसी की निंदा कर रहा है, गाली दे रहा है। कोई किसी का खंडन कर रहा है, कोई किसी की बुराइयां बता रहा है। कितने लोग प्रसन्न होकर सुनते हैं और कितनी सरलता में श्रद्धा करते हैं

तो वे मेरी जान खा जाते। इधर के लोग छोड़कर गए और नौकर मेरे पैर पकड़ लें, कि आप इस बार तो बता ही दें। मैं बहुत गरीब आदमी हूं; मेरी पत्नी बीमार है और बच्चे की शादी भी करनी है। अब आप मिल ही गए, तो अब न छोड़ूंगा।

क्या बता दूं तेरे को?

अब आप तो जानते ही हैं। नंबर बता दें।

हमारी जिज्ञासाएं भी हमारे तमस, हमारे रजस, हमारे सत्व से निकलती हैं। हम वही सोच सकते हैं। और कई बार तो अजीब हालतें हो जाती हैं।

मैं एक बार जबलपुर में खड़ा था अपने घर के बाहर। एक सज्जन मुझे मिलने आए थे पंजाब से। तो मैं बाहर ही खड़ा था बगीचे में। ऐसी कार खड़ी थी, मैं उससे टिका हुआ खड़ा था। वहीं आए, तो उनसे वहीं मैं बात करने लगा। कार के नंबर पर मेरा हाथ था। उन्होंने देखा; उन्होंने जल्दी से डायरी निकालकर नोट किया।

मैंने कहा, क्या मामला है? उन्होंने कहा, मैं समझ गया। मैं कुछ नहीं समझा कि बात क्या हुई। फिर भी मैंने कहा, मुझे भी तो कुछ समझाओ। उन्होंने कहा, अब क्या कहना। जिस काम से आया था, वह पूरा हो गया। मैंने कहा, मुझे भी थोड़ा ज्ञान दो; मामला क्या है? क्योंकि मुझे खयाल ही नहीं कि मैं उस नंबर पर हाथ रखे हूं। वह नंबर उन्होंने नोट कर लिया। वे इशारा समझ गए। वे इशारा यह समझे कि यह नंबर आने वाला है।

वे पंजाब से नंबर खोजने मेरे पास आए थे। अब अगर कहीं भूल-चूक से वह नंबर आ जाए, तो पंजाब जाना ही मेरा मुश्किल हो जाए।

आदमी की जिज्ञासा उसके अपने गुण से उठती है, उसकी खोज, उसका ज्ञान। तुम क्या जानना चाहते हो, गौर से देखना। उससे तुम्हारे गुण का तुम्हें पता चलेगा। और जिस दिन तुम कुछ भी नहीं जानना चाहते, सिर्फ होना चाहते हो, उसे दिन तुम समझना कि परमात्मा की तरफ यात्रा शुरू हुई।

क्योंकि हो सकता है, तुम कहो कि मैं परमात्मा को जानना चाहता हूं। लेकिन जरा गौर से सोचना कि अगर परमात्मा मिल जाए, तो तुम क्या पूछोगे, लाटरी का नंबर? बात खतम हो गई। परमात्मा से तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं है। परमात्मा मिल जाए, तो तुम क्या पूछोगे कि मुझे अमर बना दे? बात खतम हो गई। तुम्हारी परमात्मा से कोई जिज्ञासा नहीं, परमात्मा की कोई खोज नहीं। तुम मृत्यु से भयभीत हो! परमात्मा मिल जाए, तुम क्या कहोगे कि मुझे सम्राट बना दे दुनिया का! तो परमात्मा से तुम्हें कुछ लेना-देना नहीं।

गौर से अपनी जिज्ञासा को खोजोगे, तो तुम्हारा अपना गुण भी तुम्हें पकड़ में आ जाएगा। कम से कम तमस से ऊपर उठो, रजस से ऊपर उठो, सत्व तक आओ। उठना तो सत्व के भी ऊपर है।

इसी संबंध में भारत की खोज सारी दुनिया की खोज से ऊपर जाती है। सारे दुनिया के धर्म सत्व पर आकर रुक जाते है। अंग्रेजी का शब्द गॉड गुड का ही रूपांतर है—सत्व, भला, अच्छा, शुभ।

सारी दुनिया के धर्म सत्व तक आकर रुक जाते हैं। सिर्फ भारत में पैदा हुआ धर्म सत्व के भी पार ले जाता है। वह कहता है, वह भी गुण है। अच्छा है, माना। जंजीर वह भी है। सोने की है, माना। लेकिन लोहे की जंजीर हुई कि सोने की जंजीर, इससे क्या फर्क पड़ता है। तमस से बंधे रहे कि सत्व से बंध गए, इससे क्या फर्क पड़ता है। बुरे कारागृह में पड़े रहे कि एक महल में बंद हो गए, इससे क्या फर्क पड़ता है। बंधन बंधन है।

भारत की कामना है मुक्ति की, जहां कोई गुण न रहे जाए; जहां तुम निर्गुण, निराकार से एक हो जाओ; जहां गुणातीत हो जाओ।

- ओशो

गीता दर्शन, भाग-आठ

अध्याय-18, प्रवचन-10, प्रश्न-6

(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)

पड़ोसिन के यहां जाकर मुल्ला नसरुद्दीन की बीबी गुलजान बोली : बहन, तुम तो बड़ी परोपकारी स्त्री हो। क्या मेरा एक जरा सा काम करोगी?

पड़ोसिन बोली : हां-हां, क्यों नहीं! बोलो, क्या काम आ पड़ा है? बहन, अपना ही घर है। मैं तुम्हारी हूं, बोलो।

गुलजान ने शर्माते हुए बताया : बात यह है कि मुझे तुम्हारे पतिदेव से एक घंटे लड़ लेने दो। मेरे पति आज चार दिन से बाहर गए हुए हैं।